हिन्दी पद्य/गद्य रचना व रचनाकार

परीक्षोपयागी प्रश्नोत्तर		
•	मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी	–सूरदास
•	चरण कमल बन्दौ हरिराई	–सूरदास
•	संतन को कहा सीकरी सो काम आवत जात पनहियाँ टूटी, बिसरि गयो हरिनाम	–कुम्भनदास
•	रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जाय पर वचन न जाई	–तुलसीदास
•	निस दिन बरसत नैन हमारे	–सूरदास
•	परहित सरिस धर्म नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई	तुलसीदास
•	मो सम कौन कुटिल खल कामी	–सूरदास
•	ढोल, गँवार, सुद्र, पशु, नारी सकल ताड़ना के अधिकारी	–तुलसीदास
•	नयन जो देखा कंवल भा, निरमल नीर–सरीर। हँसत जु देखा हंस भा, दसन ज्योति नगहरि	–मलिक मोहम्मद जायसी
•	मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ जा तन की झाँई परै, श्याम हरित दुत होय	–बिहारीलाल
•	कनक–कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। वा खाय बौराइ जग, वा पाए बौराय	–बिहारी
•	हरि मोरि पिउ, मैं राम की बहुरिया	–कबीरदास
•	बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर	–कबीरदास
•	जाके सिर मोर मुकुट मेरौ पति सोई	–मीराबाई
•	मैं तो गिरिधर के घर जाऊँ	–मीराबाई
•	बसौ मेरे नैनन में नंदलाल	–मीराबाई
•	पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा	–नरोत्तमदास
•	पानी परात को हाथ छुऔ नहि, नैनन के जल सो पग धोए	–नरोत्तमदास
•	जाके प्रिय न राम वैदेही। तजिये ताहि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही	–तुलसीदास
•	मंगल भवन अमंगल हारी	–तुलसीदास
•	तीन बेर खाती ते वे तीन बेर खाती हैं	–भूषण
•	निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल	–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
•	नैन नचाइ कही मुसुकाय, लला फिरि आइयो खेलन होरी	–पद्माकर
•	इन मुसलमान हरिजनन पै, कोटिन हिंदु वारिए	–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
•	खूब लड़ी मर्दानी, वह तो झाँसी वाली रानी थी	–सुभद्राकुमारी चौहान
•	राणा की पुतली फिरी नहीं, तब तक चेतक मुड़ जाता था	–श्यामनारायण पाण्डेय
•	कवि कुछ ऐसी तान सनाओ, जिससे उथल–पुथल मच जाए।	–बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
•	माली आवत देखि कर, कलियन करी पुकारि। फूले–फूले बिन लिए, काल्हि हमारी बारि	–कबीरदास

•	मैं नीर भरी दुःख की बदली	–महादेवी वर्मा
•	जागो फिर एक बार	–सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
•	बीती विभावरी जाग री। अम्बर–पनघट में डुबो रही, तारा–घट ऊषा नागरी।	जयशंकर प्रसाद
•	इस बार प्रिय तुम को मद है, उस पार न जाने क्या होगा	–हरिवंशराय बच्चन
•	पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो	–मीराबाई
•	वर दे, वीणा वादिनी वर दे	–सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'
•	तरिनि तनूजा–तट तमाल तरुवर बहु–छाये	–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
•	पराधीन सपने हूँ सुख नाही	–तुलसीदास जी
•	नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पद तल में	–कामायनी
•	बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है	–राम चन्द्र शुक्ल (चिन्तामणि भाग–1)
•	केशव को कठिन काव्य का प्रेत	–रामचन्द्र शुक्ल
•	यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबन्ध गद्य की कसौटी है	–रामचन्द्र शुक्ल

EduBull.com